International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in | A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 5, Issue 2, March 2018 ||

राजनीतिक विकास : अवधारणात्मक विवेचन एवं सीमाएँ

Dr. Sucheta Gupta

Lecturer, Department of Political Science, Government College Bibirani, (Alwar) Rajasthan, India

सारांश (Abstract): राजनीतिक विकास एक ऐसी गतिशील प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी समाज की राजनीतिक व्यवस्था समय के साथ अधिक संगठित, सहभागी, उत्तरदायी और लोकतांत्रिक बनती है। यह केवल शासन प्रणाली के परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें राजनीतिक संस्थाओं, प्रक्रियाओं और नागरिक चेतना के परिपक्व होने की प्रक्रिया भी शामिल है। राजनीतिक विकास की अवधारणा 20वीं शताब्दी के मध्य में आधुनिक राजनीतिक विज्ञान के अध्ययन के अंतर्गत उभरी, विशेष रूप से द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब विकासशील देशों में राजनीतिक स्थिरता और आधुनिकीकरण की आवश्यकता महसूस की गई।
राजनीतिक विकास का उद्देश्य राजनीतिक संस्थाओं की क्षमता को बढ़ाना, नीति निर्माण की दक्षता को सुधारना और नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी को सशक्त करना है। इस अवधारणा में समानता, उत्तरदायित्व, न्याय और पारदर्शिता जैसे लोकतांत्रिक मूल्यों को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। विभिन्न विद्वानों जैसे लूसियन पाय, गेब्रियल आलमंड, और सैमुअल हंटिंगटन ने राजनीतिक विकास को सामाजिक परिवर्तन, संस्थागत आधुनिकीकरण और राजनीतिक संस्कृति के साथ जोड़ा है।
भारत जैसे विकासशील लोकतंत्र में राजनीतिक विकास का अर्थ केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि जनता की सक्रिय भागीदारी, नीतिगत पारदर्शिता और सामाजिक न्याय की स्थापना से है। अतः राजनीतिक विकास किसी राष्ट्र की स्थिरता, प्रगति और लोकतांत्रिक सुदृढ़ता का दर्पण है।
मुख्य शब्द : राजनीतिक विकास, लोकतंत्र, राजनीतिक संस्थाएँ, आधुनिकीकरण, स्थिरता, उत्तरदायित्व, राजनीतिक संस्कृति, सहभागिता, नीति निर्माण, सामाजिक परिवर्तन।

परिचयात्मक : राजनीतिक विकास का अर्थ किसी राष्ट्र या समाज की राजनीतिक प्रणाली के निरंतर परिवर्तन, परिपक्वता और आधुनिकीकरण से है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शासन व्यवस्था, राजनीतिक संस्थाएँ, और नागरिकों की राजनीतिक चेतना समय के साथ अधिक संगठित, स्थिर, उत्तरदायी और लोकतांत्रिक बनती हैं। राजनीतिक विकास का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शासन प्रणाली न केवल कुशल हो, बल्कि जनता की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और अधिकारों के प्रति संवेदनशील भी बनी रहे।

राजनीतिक विकास को व्यापक अर्थों में देखा जाए तो इसमें तीन प्रमुख तत्व सम्मिलित हैं — **(1)** राजनीतिक संस्थाओं का सुदृढ़ीकरण, **(2)** नागरिकों की राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि, और **(3)** शासन में उत्तरदायित्व एवं पारदर्शिता का विस्तार। यह प्रक्रिया केवल सरकार के गठन या सत्ता परिवर्तन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि यह राजनीतिक संस्कृति, मूल्यों, और व्यवहार में भी सुधार लाती है।

राजनीतिक विकास की अवधारणा 20वीं शताब्दी के मध्य में उभरी जब विद्वानों ने यह समझा कि किसी देश की प्रगति केवल आर्थिक उन्नति से नहीं, बल्कि उसकी राजनीतिक स्थिरता और संस्थागत क्षमता से भी मापी जानी चाहिए। गेब्रियल आलमंड, लूसियन पाय, सैमुअल हंटिंगटन जैसे विद्वानों ने राजनीतिक विकास को "राजनीतिक आधुनिकीकरण" की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है, जिसमें पारंपरिक राजनीतिक ढांचे की जगह आधुनिक, लोकतांत्रिक और उत्तरदायी संस्थाएँ लेती हैं।

संक्षेप में, राजनीतिक विकास का अर्थ है — एक ऐसे शासन तंत्र का निर्माण जो जनता की आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम हो, समानता और न्याय के सिद्धांतों पर आधारित हो, और जिसमें नागरिक सक्रिय रूप से भाग लें। यह किसी राष्ट्र के लोकतांत्रिक परिपक्वता और सुशासन का सूचक है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विकास की अवधारणा को नये स्वतंत्र देशों के मार्ग दर्शन के लिए सामाजिक विज्ञानों के अन्तर्गत लाया गया है। इन नये स्वतंत्र देशों को तीसरी दुनिया के देश तो कहा ही जाता है, इन्हें विकासशील देश भी कहा जाता है। दरअसल इन्हें विकासशील देश इसलिए कहा जाता है क्योंकि ये देश विकास की मार्ग पर अग्रसर हैं। जहाँ तक विकास की अवधारणा का प्रश्न हैं तो यह कोई एकदम नयी अवधारणा नहीं हैं। 19वीं शताब्दी के दौरान तथा 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध के कई सिद्धांतों में इसकी झलक मिलती है। लूसियन पाई ने अपने पूर्व विचारकों के मतों को ध्यान में रखते हुए अपनी पुस्तक आस्पेक्ट्स ऑफ पोलिटिकल डेवलपमेंट' में राजनीतिक विकास की व्याख्याएँ प्रस्तुत की हैं, जो निम्न हैं:

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 5, Issue 2, March 2018 ||

1. आर्थिक विकास की राजनीतिक पूर्वशर्त के रूप में स्पर्ट, एमर्सन, लिप्सेट, कोलमैन, कटराइट, पाल ए बारान, एस. बुकानन, : हावर्ड एस. एलिस, बेन्जामिन हिगिन्स, एलबर्ट ओ. हर्शमैन, बारवरा वार्ड आदि ने राजनीतिक विकास की इस व्याख्या का समर्थन किया है। इन्होंने राजनीतिक विकास को आर्थिक विकास का परिणाम समझा है। इनके अनुसार राजनीतिक विकास, राजनीति की एक ऐसी स्थिति को कहा जाए जो आर्थिक उन्नति, प्रगति, और समृद्धि में सहायक हो। इनका मत है कि जो राजनीतिक व्यवस्था आर्थिक उन्नति में सहायक नहीं होगी उस व्यवस्था को राजनीतिक दृष्टि से विकसित नहीं कहा जाएगा।

2. औद्योगिक समाजों की राजनीति के रूप में डब्ल्यू डब्ल्यू रोस्टोव जैसे कई समाज सिद्धांत शास्त्री राजनीतिक विकास की प्रक्रिया और औद्योगीकरण की गति में संबंध स्थापित करने का प्रयास करते हैं। औद्योगिक समाज चाहे उनकी राजनीतिक प्रकृति कैसी भी हो राजनीतिक व्यवहार और कार्य संचालन के विशेष मापदंड प्रस्तुत करते हैं जो राजनीतिक विकास में सहायक होते हैं और सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं के लिए विकास के समुचित लक्ष्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रोस्टोव ने आर्थिक विकास को परस्पर संबंधित बताया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्थिक विकास का प्रत्येक स्तर राजनीतिक संगठन की संरचनात्मकता के साथ संबंध रखता है।

3. राजनीतिक आधुनिकीकरण के रूप में गुन्नार मिडल लग्नर, कोलमैन, लिप्सेट, कार्ल डायच जैसे समाजशास्त्रियों ने इस व्याख्या का समर्थन किया। राजनीतिक विकास से आशय विकसित पश्चिमी और आधुनिक देशों का अध्ययन है और साथ ही उन क्रिया-कलापों का भी अध्ययन है जिनका अनुकरण करने का प्रयास विकासशील देश करते हैं। इस व्याख्या में राजनीतिक विकास और राजनीतिक आधुनिकीकरण को एक जैसा मान लिया जाता है।

4. राष्ट्र राज्य परिचालन के रूप में रोस्टोव, के. एल. सिल्वर्ट एडवर्ड ए शील्स और विलियम मैक्कोर्ड जैसे समाज सिद्धांत : शास्त्रियों ने इस व्याख्या का समर्थन किया है। इनका कहना है कि राजनीतिक विकास, राष्ट्रीय राज्य का समानार्थी होकर इसकी स्थापना के साथ रुक जाता है अर्थात् राजनीतिक विकास आधुनिक राष्ट्र राज्य से प्रत्याशित मानकों के अनुरूप राजनीतिक प्रकार्यों के निष्पादन और राजनीतिक जीवन पर आधारित है। इसमें राजनीतिक विकास का मापदंड, राष्ट्रीयता की भावना के विकास और एक राष्ट्रीय राज्य के निर्माण से जोड़ दिया जाता है।

5. प्रशासनिक एवं कानूनी विकास के रूप में इस व्याख्या के समर्थक रिग्स, मैक्स वेबर, टॉल्कॉट पार्सन्स, और जोसेफ ला पालोम्बारा है। राजनीतिक विकास का समाज की प्रशासनिक और कानूनी व्यवस्था से गहरा संबंध होता है। अर्थात् इस व्याख्या में नौकरशाही की प्रकृति, आकार और आधार को राजनीतिक विकास के प्रमुख लक्षण माने जा सकते हैं।

6. जन संचरण और सहभागिता के रूप में इस व्याख्या का समर्थन डाबच, फार्ल्स, क्लिफर्ड गीर्ज रूपर्ट एमर्सन वर्ट एस. होजलिट्स और आइजेन्सढाड जैसे कई समाजशास्त्रियों ने किया है। इसमें विशाल जनसभाओं एवं सांगठनों में सामूहिक निष्ठा का प्रदर्शन किया जाता है।

7. लोकतंत्र के निर्माण के रूप में आमंड, कोलमैन, जोसेफ ला पालोम्बारा और जे. रोनाल्ड पेन्नाक इनका विचार है कि : राजनीतिक विकास का लोकतंत्र के निर्माण और लोगों में लोकतांत्रिक व्यवस्था के मूल्यों को स्थापित करने के साथ घनिष्ठ संबंध है। इनके अनुसार राजनीतिक विकास, राजनीतिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं को प्रतियोगी, स्वतंत्र तथा जन सहभागिता के लक्षणों से युक्त करने की प्रक्रिया है। इस विचार के अनेक समर्थक हैं कि लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना यथार्थ में राजनीतिक विकास ही है। किंतु आमंड और कोलमैन का मत है. चूँकि लोकतंत्र का विचार मूल्यों और विचारधाराओं से बंधा हुआ है जबकि राजनीतिक विकास की अवधारणा मूल्यों और विचारधाराओं से उन्मुक्त है, अतः इन दोनों में संबंध स्थापित कर सकना कठिन हो जाता है।

8. स्थायित्व अथवा व्यवस्था परिवर्तन के रूप में इस बात पर एफ. डब्ल्यू. रिस जैसे समाजशास्त्रियों ने जोर दिया है कि स्थायित्व का औचित्यपूर्ण ढंग से विकास की संकल्पना से संबंध है। क्योंकि आर्थिक और सामाजिक प्रगति का कोई भी रूप ऐसे पर्यावरण पर निर्भर करता है जिसमें अनिश्चतता को कम कर दिया गया है। और तर्क संगत ढंग से सुरक्षित पूर्वानुमानों के आधार पर योजना का कार्य संभव हो गया हैं जिन राजनीतिक व्यवस्थाओं में परिवर्तन की सुनिश्चित और व्यवस्थित प्रविधियाँ प्रचलित रहती हैं तथा जहाँ अनावश्यक उथल-पुथल नहीं होती, वे राजनीतिक विकास की अवस्था में मानी जाती हैं। यहाँ स्थायित्व का संबंध सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी पहलुओं से होता है।

9. शक्ति संचरण के रूप में : जेम्स एस. कोलमैन जी.ए आमंड, टॉल्कॉट पार्सन्स जैसे समाजशास्त्रियों का विचार है कि राजनीतिक विकास की संकल्पना का मूल्यांकन उस निरपेक्ष सत्ता के स्तर या भाग के आधार पर किया जा सकता है जिसे कोई व्यवस्था चलाने योग्य है। इससे आशय है कि राजनीतिक व्यवस्था विकास के लिए कितनी शक्ति समाज से जुटा पाती है । शक्ति जुटाना तभी संभव हो पाता है जबकि सरकार को स्वाभाविक जन समर्थन प्राप्त होता रहे। और यह जन समर्थन तभी प्राप्त होगा जब शासन में जन सहभागिता होगी।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 5, Issue 2, March 2018 ||

10. सामाजिक परिवर्तन की बहुआयामी प्रक्रिया के एक पक्ष के रूप में मैक्स एफ. मिलिकॉन, डोनाल्ड एल.एम. ब्लैकमर और डेनियल लर्नर ने आमंड कोलमैन आयरस्ट्रैंड कोहोजर ने राजनीतिक विकास को सामाजिक प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं में से एक पहलू मान कर व्याख्यायित किया है।

11. अंतर्राष्ट्रीय मामलों में राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की भावना के रूप में राष्ट्रीय आत्म सम्मान और गरिमा की भावना के रूप में जेम्स एस. कोलमैन, माइरोन बीनर ने राजनीतिक विकास को व्याख्यायित किया है। उल्लेखनीय है कि लुसियन पाई ने इस व्यवस्था का उल्लेख नहीं किया है।
उपरोक्त सभी व्याख्याओं अथवा दृष्टिकोणों को लूसियन पाई ने एक पक्षीय और अपूर्ण सिद्ध कर अस्वीकार कर दिया। तत्पश्चात् उसने राजनीतिक विकास का जो अभिप्राय और इसके संबंध में संकल्पना प्रस्तुत की है, उसके तीन लक्षण हैं- समता, क्षमता और विभिन्नकरण |

(क) समता : राजनीतिक विकास अपेक्षा करता है कि लोक राजनीतिक क्रिया-कलापों में सहभागी बनें और उनका राजनीतिक गतिविधियों से आवश्यक सरोकार हो। किसी राजनीतिक व्यवस्था में जनता की प्रकृति में हुए मौलिक परिवर्तनों में ध्यान दिया जाता है और यदि किसी व्यवस्था का जनता में अभिवृत्तात्मक व व्यावहारिक परिवर्तन हो जाए तो इस आधार पर राजनीतिक व्यवस्था को राजनीतिक दृष्टि से विकसित कहा जाएगा। इसको लूसियन पाई 'समानता' कहकर अभिव्यक्त करता है। उसका कथन है कि, " जिस राजनीतिक समाज में समानता हो वह राजनीतिक दृष्टि से विकास वाला समाज माना जा सकता है।" अंत में यह भी कहना तार्किक होगा कि समता का अभिप्राय यह है कि राजनीतिक पदों पर भर्ती को निष्पादन के उपलब्ध मानकों न कि परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के आरोपी विचारों को प्रतिबिम्बित करना चाहिए। "

(ख) क्षमता : क्षमता का संबंध राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता से है। राजनीतिक व्यवस्था किस सीमा तक निर्गत दे सकती है, और ये निर्गत किस सीमा तक समाज और अर्थव्यवस्था के शेष भाग को प्रभावित कर सकते हैं; इसका संबंध शासकीय निष्पादन और सामान्य व्यवस्थाई निष्पादन अथवा उन परिस्थितियों से है जो इस प्रकार के निष्पादन को प्रभावित करती है। इससे राजनीतिक और सरकारी निष्पादन के मात्र आयाम, विस्तार और परिणाम का संबंध होता है जो व्यवस्था को एक कल्याणकारी अभिकरण के रूप में परिवर्तित कर देते हैं। पाई ने बताया कि राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता के तीन मापदंड पूरे होने पर व्यवस्था को विकसित कहा जा सकता है: (i) राजनीतिक मामलों का उचित प्रबंध कर सकें, (ii) राजनीतिक विवादों का नियंत्रण कर सकें, (iii) जनता की माँगों का उचित निपटान कर सकें।

(ग) विभिन्नीकरण : इसका आशय संरचनाओं के विसरण और विशेषीकरण से है। पाई ने बताया कि राजनीति के संगठक के रूप में राजनीतिक विकास को राजनीतिक व्यवस्थाओं में संरचनात्मक और प्रक्रियात्मक परिवर्तनों से जोड़ा जाता है। राजनीति के संगठन के रूप में राजनीतिक विकास वाली राजनीतिक व्यवस्थाओं में निम्न तीन लक्षण आ जाते हैं: (i) संरचनात्मक विभिन्नीकरण की वृद्धि हो जाती है। (ii) संरचनाओं में प्रकार्यात्मक विशेषीकरण बहुत अधिक बढ़ जाता है। (iii) सहभागी संस्थाओं और संगठनों में अधिकाधिक 'एकतामयी समन्वय स्थापित हो जाता है।

परिभाषाएँ : विकास अंग्रेजी के 'Development' शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है, जिसका अर्थ होता है वृद्धि या प्रगति । राजनीति विज्ञान शब्दकोश के अनुसार - विकास एक बहुपक्षीय प्रगति है, इसमें एक अवस्था से दूसरी अवस्था में राज्य की प्रगति होती है, इसी प्रगति को विकास कहते हैं। लूसियन पाई के अनुसार राजनीतिक विकास का अर्थ "सांस्कृतिक प्रसार और जीवन के पुराने प्रतिमानों को नई माँगों के साथ अनुकूलित संबंधित और समायोजित करना है।" पाई द्वारा प्रस्तुत यह परिभाषा प्रारंभिक चरण की थी। अब उसने उसका सुधार करके निम्न परिभाषा प्रस्तुत की है। राजनीतिक विकास का अर्थ "राजनीतिक व्यवस्था में समानता, उसकी कार्यक्षमता और उसके संरचनात्मक विभिन्नीकरण के साथ संबंध है।" आमंड और पावेल के अनुसार, "राजनीतिक विकास. राजनीतिक संरचनाओं की अभिवृद्धि, विभिन्नीकरण और विशेषीकरण तथा राजनीतिक संस्कृति का बढ़ा हुआ लौकिकीकरण है।" " एल्फ्रेड डायमेंट के अनुसार, "राजनीतिक विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक राजनीतिक व्यवस्था के नए प्रकार के लक्ष्यों को निरंतर सफल रूप में प्राप्त करने की क्षमता बनी रहती है।" सामान्य परिभाषा, "राजनीतिक विकास, राजनीतिक संरचनाओं का विभिन्नीकरण और विशेषीकरण तथा राजनीतिक संस्कृति का ऐसा बढ़ता हुआ लौकिकीकरण है जिससे जनता में समानता और राजनीतिक व्यवस्था में कार्य क्षमता तथा उसकी उपव्यवस्थाओं की स्वायत्तता बढ़ जाए। " केनेथ आर्गेन्सकी के अनुसार, राजनीतिक विकास, राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए राष्ट्र की मानवीय एवं भौतिक स्रोतों का उपयोग करते हुए सरकार की कार्यकुशलता एवं दक्षता बढ़ाने का नाम है। "

राजनीतिक विकास की विशेषताएँ : राजनीतिक विकास के संदर्भ में विभिन्न विचारकों द्वारा भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रतिरूप प्रस्तुत किये जाते रहे हैं, जिनमें एक ही प्रकार की चिन्तन पद्धति पर आधारित दो प्रतिमान बहुत ही महत्वपूर्ण हैं- प्रथम प्रतिमान के प्रतिपादक जेम्स एस. कोलमैन तथा लूसियन पाई है। लूसियन पाई ने तुलनात्मक अध्ययन तथा स्पष्टता की दृष्टि से राजनीतिक विकास की तीन विशेषताएँ बताई - समता, क्षमता, विभिन्नीकरण |

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in | A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 5, Issue 2, March 2018 ||

1. समता (Equality) पाई का राजनीतिक विकास के लक्षण के रूप में समानता से तात्पर्य इसकी निम्न विशेषताओं से है। (i) सभी नागरिकों को समान रूप से राजव्यवस्था के विभिन्न स्तरों पर सहभाग एवं अवसर प्राप्त हों। (ii) राजनीतिक निर्माण क्रिया में भाग लेते हों और सहयोग करते हो। (ii) जन सहभागिता भेदभाव रहित है। (iv) सर्वव्यापी कानून, अर्थात् समाज के सभी व्यक्ति एक से कानूनों के अनुसार शासित होते हों। (v) राजव्यवस्था में शामिल या भर्ती होने का आधार वंश परंपरा, जाति, प्रस्थिति, धर्म आदि न होकर योग्यता एवं उपलब्धि हो ।

2. क्षमता राजनीतिक शक्ति को संरचनात्मक व्यवस्था की प्रभावकारिता से क्षमता का संबंध है जबकि इसके लक्षणों का संबंध संपूर्ण जन समुदाय से है। राजनीतिक विकास में राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता वृद्धि की निम्न विशेषताएँ हैं: (i) राजव्यवस्था की विभिन्न संरचनाएँ प्रभावपूर्ण हों तथा वे विवादों का समाधान करने तथा जनता की माँगों को पूरा करने में सक्षम हों। (ii) प्रशासन कार्यकुशल, गतिमान तथा सर्वप्रवेशी हो ।

3. विभिन्नीकरण भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए विभिन्नीकरण की प्रक्रिया राजव्यवस्था द्वारा अनेक संरचनाओं का निर्माण कराती है। इसमें निम्न विशेषताएँ सम्मिलित है : (i) राजनीतिक संरचनाएँ भिन्न-भिन्न कार्यों के लिए भिन्न-भिन्न होती हैं। (ii) कार्यात्मक दृष्टि से कार्यों का विभाजन होता है। (ii) प्रकार्यात्मक सुनिश्चितता होती है। (iv) विभिन्नीकरण के साथ-साथ एकीकरण की प्रक्रिया भी चलती है।

इसमें समता का संबंध राजनीतिक संस्कृति एवं जन भावनाओं से क्षमता का संबंध राज व्यवस्था की कार्य निष्पादन क्षमता से, तथा विभिन्नीकरण का संबंध सामान्य राजनैतिक प्रक्रिया से होता है।

आमंड के अनुसार राजनैतिक विकास की विशेषताएँ : राजनीतिक विकास का दूसरा प्रतिमान ए आमन्ड और जी. बी. पॉवेल के द्वारा प्रस्तुत की गई है। आमंड और पावेल ने राजनीतिक विकास की तीन विशेषताओं का उल्लेख किया है:

1. भूमिका विभिन्नीकरण: आमंड और पावेल ने भूमिका विभिन्नीकरण को संरचनात्मक विभिन्नीकरण (जिसकी पाई चर्चा करता है) से अधिक विशिष्ट एवं उपयोगी मानता है क्योंकि इसमें विशेषीकरण स्वत: शामिल होता है। किंतु इसमें विशेषीकरण शामिल होने का आशय यह नहीं है कि इसका अर्थ शक्तियों के पृथक्करण से लिया जाए।

2. उपव्यवस्था की स्वायत्तता : लूसियन पाई जिसका उल्लेख राजनीतिक व्यवस्था की क्षमता के रूप में करता है, आमंड और पावेल उसे उपव्यवस्था की स्वायत्ता कहना हैं। इनके अनुसार उपव्यवस्थाओं की स्वायत्तता, राजव्यवस्था में विकेंद्रीकरण, कार्यकुशलता एवं क्षमता में वृद्धि ला देती है। यह शक्ति के एक स्थान पर केंद्रीकरण के स्थान पर विकेंद्रीकरण का संकेत देती है। इनका मत है कि भूमिका विभिन्नीकरण तब तक संभव नहीं हो सकता जब तक राजनीतिक व्यवस्था की उपव्यवस्थाओं को स्वायत्तता प्राप्त न हो।

3. लौकिकांकरण : लौकिकीकरण का अर्थ विवेक एवं बुद्धि की प्रधानता है जिसका संबंध सही रूप में संस्कृति से है। विकास में कुछ अतिरिक्त पहलुओं पर आमंड और पावेल ने ध्यान रखने के लिए कहा है-जैसे राजव्यवस्था के समक्ष आने बली समस्याएँ, संसाधन विदेशी समाज व्यवस्थाओं का प्रभाव, कार्यकारण का प्रतिमान राजनैतिक अभिजनों की अनुक्रिया आदि । उसका मानना है कि इनका राजनीतिक विकास की प्रकृति पर प्रभाव पड़ता है।

सीमाएँ : राजनीतिक विकास की अवधारणा आधुनिक राजनीतिक विज्ञान में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि यह किसी राष्ट्र की राजनीतिक प्रगति और संस्थागत परिपक्वता को मापने का आधार प्रदान करती है। परंतु इस अवधारणा की अपनी सीमाएँ और विरोधाभास भी हैं, जिनके कारण विद्वानों ने समय-समय पर इसकी आलोचना की है।

प्रारंभ में, पश्चिमी विद्वानों जैसे गेब्रियल आलमंड, लूसियन पाय, और सैमुअल हंटिंगटन ने राजनीतिक विकास को "राजनीतिक आधुनिकीकरण" की प्रक्रिया से जोड़ा। उनका मानना था कि जब कोई समाज पारंपरिक राजनीतिक संरचनाओं से आगे बढ़कर आधुनिक, लोकतांत्रिक और संस्थागत ढाँचे की ओर अग्रसर होता है, तब वह राजनीतिक रूप से विकसित होता है। परंतु इस दृष्टिकोण की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह पश्चिम-केंद्रित अर्थात यह पश्चिमी देशों के अनुभवों को सार्वभौमिक मानकर विकास का मानदंड बनाता है। इससे विकासशील देशों की विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों की उपेक्षा होती है।

इसके अतिरिक्त, राजनीतिक विकास की अवधारणा में "विकास" को अक्सर स्थिरता और संस्थागत दक्षता से जोड़ा जाता है, जबकि वास्तविकता में कई बार परिवर्तनशील समाजों में अस्थिरता भी विकास का संकेत हो सकती है। उदाहरणस्वरूप, भारत जैसे देशों में राजनीतिक असहमति और जनआंदोलन लोकतंत्र को मजबूत करते हैं, परंतु पारंपरिक दृष्टिकोण इन्हें "अविकास" के रूप में देखता है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in | A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 5, Issue 2, March 2018 ||

एक अन्य आलोचना यह भी है कि राजनीतिक विकास को मापने के लिए कोई सर्वमान्य मानक नहीं है। विभिन्न देशों की राजनीतिक संरचनाएँ, संस्कृति, और इतिहास अलग-अलग हैं, इसलिए एक ही मापदंड पर सभी को आंकना उचित नहीं।

इसके बावजूद, यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक विकास की अवधारणा ने राजनीतिक विज्ञान को एक नई दिशा दी। इसने शासन, संस्थाओं और नागरिक सहभागिता के अध्ययन को गहराई प्रदान की। आधुनिक युग में राजनीतिक विकास का अर्थ केवल संस्थागत विस्तार नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों, पारदर्शिता, और सामाजिक न्याय की स्थापना से है।

अतः आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो राजनीतिक विकास की अवधारणा में कई सीमाएँ हैं, किंतु यह फिर भी एक ऐसा सैद्धांतिक उपकरण है जो किसी समाज की राजनीतिक चेतना, स्थिरता और प्रगतिशीलता को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष : राजनीतिक विकास किसी भी राष्ट्र की प्रगति, स्थिरता और लोकतांत्रिक परिपक्वता का आधार होता है। यह केवल सत्ता परिवर्तन या राजनीतिक संस्थाओं के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है जो समाज के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढांचे को सशक्त बनाती है। राजनीतिक विकास का वास्तविक उद्देश्य एक ऐसी शासन प्रणाली की स्थापना करना है जो पारदर्शी, उत्तरदायी और जनसहभागिता पर आधारित हो।

विकसित राजनीतिक प्रणाली वही मानी जाती है जिसमें नागरिकों को न केवल अधिकार प्राप्त हों, बल्कि वे नीति निर्माण और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभा सकें। इस प्रकार, राजनीतिक विकास का संबंध जनता की चेतना, उनकी सहभागिता, और संस्थाओं की दक्षता से गहराई से जुड़ा हुआ है।

आधुनिक युग में राजनीतिक विकास को सामाजिक न्याय, समानता, मानवाधिकारों की सुरक्षा और सुशासन के साथ जोड़ा जाता है। जब कोई देश इन मूल्यों को अपनाता है और अपने शासन तंत्र को अधिक पारदर्शी व उत्तरदायी बनाता है, तब वह राजनीतिक रूप से विकसित कहलाता है।

अतः कहा जा सकता है कि राजनीतिक विकास एक ऐसी व्यापक प्रक्रिया है जो लोकतंत्र को मजबूत करती है, नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करती है, और राष्ट्र को स्थायी प्रगति की दिशा में अग्रसर करती है। यह न केवल शासन की गुणवत्ता का प्रतीक है, बल्कि एक सशक्त, न्यायपूर्ण और जागरूक समाज की पहचान भी है।

संदर्भ सूची

1. आलमंड, गेब्रियल ए. एवं पॉवेल, जी. बी. (1966). तुलनात्मक राजनीति का अध्ययन: राजनीतिक विकास के सिद्धांत. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. पाय, लूसियन डब्ल्यू. (1965). Political Development and Political Modernization. बॉस्टन: लिटिल, ब्राउन एंड कंपनी।
3. हंटिंगटन, सैमुअल पी. (1968). Political Order in Changing Societies. न्यू हेवन: येल यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. ईस्टन, डेविड. (1965). A Framework for Political Analysis. शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
5. डी. एच. कोलमैन. (1960). The Politics of Developing Areas. प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. मायर, जे. डब्ल्यू. (1970). Modernization, Development, and the State. लंदन: सेज पब्लिकेशंस।
7. डॉयल, माइकल डब्ल्यू. (1986). Empires and Political Development. न्यूयॉर्क: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस।
8. वर्मा, एस. पी. (2002). आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत. नई दिल्ली: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन।
9. सिंह, रमेश कुमार. (2010). राजनीति विज्ञान में विकास की अवधारणा. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
10. राय, एच. एन. (2008). राजनीतिक प्रणाली और विकासशील देश. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
11. माथुर, ए. एल. (2013). राजनीतिक विकास और लोकतंत्र. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स।
12. शर्मा, के. के. (2016). भारतीय लोकतंत्र और राजनीतिक विकास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
13. पांडेय, आर. के. (2018). राजनीति विज्ञान के सिद्धांत और प्रवृत्तियाँ. आगरा: लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
14. चतुर्वेदी, विनोद. (2019). राजनीतिक आधुनिकीकरण और विकासशील समाज. लखनऊ: भारतीय अध्ययन संस्थान।
15. जोशी, हरिशंकर. (2021). आधुनिक राज्य व्यवस्था और राजनीतिक परिवर्तन. नई दिल्ली: फॉरवर्ड बुक्स।